कर्मयोगकी प्रस्तावना

भूमिका

कुछ लोगोंको 'कर्मयोग'का अर्थ भिखारियोंके लिए दानकर्म करनेवाले, विद्यालय-महाविद्यालय स्थापित करनेवाले एवं सामाजिक कार्य करनेवाले 'कर्मयोगियों'का स्मरण होता है । इनका कार्य अधिकतर भावनावश अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करनेके लिए होनेके कारण, वह कर्मयोग नहीं है । कर्मयोग का सटीक अर्थ क्या है ? जो कर्म करनेसे हमारी आध्यात्मिक उन्नति होकर हमें ईश्वरप्राप्ति होती है, ऐसा कर्म करते रहना 'कर्मयोग' है । व्यवहारिक कर्मके भी चित्तपर संस्कार न होने देना तथा स्थायी रूपसे संस्कारबन्धनसे मुक्त होना कर्मयोगमें अभिप्रेत है । हिन्दू धर्म एवं धर्मशास्त्रको अपेक्षित कर्म, आसक्ति और फलकी आशा त्यागकर करना, कर्मयोगकी श्रेष्ठ व्याख्या है । भक्तियोगी, ध्यानयोगी आदि भी यदि अपनी साधनाको कर्मयोग मानकर करें, तो उनकी साधना अच्छी होनेमें निश्चित ही सहायता मिलती है ।

'कर्मयोग' इस विषयकी व्याप्ति बडी है । इसलिए उससे सम्बन्धित विविध सूत्र हमने 'कर्मयोग' ग्रन्थमालाके विविध ग्रन्थोंमें स्पष्ट किए हैं । प्रस्तुत ग्रन्थ कर्मयोगसे सम्बन्धित मूलभूत जानकारी देनेवाला एवं इस मार्गसे की जानेवाली साधनाका सारांश स्पष्ट करनेवाला ग्रन्थ है । कर्मयोगका इतिहास; कर्म करनेका महत्त्व; कर्मयोगकी विशेषताएं; कर्मयोगका रहस्य अर्थात कर्तापनका त्याग एवं कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग, इन मार्गोंके अनुसार वह कैसे करना चाहिए; स्वधर्मकर्म, कर्तव्यकर्म क्यों एवं कैसे करना चाहिए आदि तर्कपूर्ण विचार एवं विवेचन यह ग्रन्थ करता है ।

महान योगतपस्वी गुरुदेव डॉ. काटेस्वामीजीने श्रीमद्भगवद्गीताके अनेक श्लोकोंका मतितार्थ हमें बताया है । इसलिए कर्मयोग जैसा कठिन विषय इस ग्रन्थमें सरल कर पाए हैं । इसलिए हम गुरुदेवके चरणोंमें कितनी भी कृतज्ञता व्यक्त करें, वह अपूर्ण ही है ।

प्रत्यक्ष दैनिक जीवनसे सम्बन्धित कर्मयोगका आचरण कर आध्यात्मिक उन्नति करनेकी इच्छा साधकोंके मनमें उत्पन्न हो, ऐसी श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. कर्मयोगकी परिभाषाएं १६

२. कर्मयोगके समानार्थी शब्द १६

३. कर्म एवं कर्मयोग १६

* कर्मयोगमें निष्काम भाव न हो, तो वह केवल कर्म होना १७

* कर्मयोगमें कर्मका अर्थ कोई भी कर्म करना नहीं, अपितु वेदसम्मत कर्म करना है १७

* कर्मयोग अशास्त्रीय कर्मोंको कुशलतासे करने हेतु नहीं १८

* कर्मसे सन्तुष्टि अर्थात कर्मयोग साध्य होना १८

४. कर्मयोगका इतिहास १८

५. कर्मयोगका महत्त्व २८

५ अ. कर्मयोगके अनुसार कर्मका महत्त्व २८

५ आ. व्यष्टि साधनाके सन्दर्भमें कर्मयोगका महत्त्व ३०

* कुशलतासे कर्म करना योग ३१

* वासनाओंके त्याग हेतु कर्मयोगका आचरण आवश्यक ३२

* कर्मयोगसे सभी दु:खोंसे छुटकारा मिलना ३५

* कर्मयोगसे भवरोग (जन्म-मृत्युका चक्र) नष्ट होना ३५

५ इ. समष्टि साधनाके सन्दर्भमें कर्मयोगका महत्त्व ३५
* समाजके सामने आदर्श प्रस्तुत करना ३६
* समष्टि पुण्य बढकर राष्ट्रका आचार-विचार संपन्न होना ३७
६. कर्मयोगकी विशेषताएं ३७
* कर्मकी गति (स्वरूप) गहन ३७
* केवल कर्म न करनेसे 'कर्मत्याग' न होना ३८
७. कर्मयोगका रहस्य है कर्तापनका त्याग ४०
७ अ. कर्ताके प्रकार, कर्ताको कर्मानुसार मिलनेवाला फल आदि ४०
७ आ. कर्म, ज्ञान एवं भक्ति योगानुसार कर्तापनका त्याग ४६
८. कर्मयोगके अनधिकारी ५४
* ईश्वरको न माननेवाला सज्जन व्यक्ति नाममात्र कर्मयोगी ५५
* धार्मिक कार्यपर विश्वास न रखनेवाले सन्तोंका सामाजिक कार्यमें सक्रिय होना ! ५६
९. कर्मयोगके अनुसार किए जानेवाले कर्मोंका (साधनाका) सार ५६
९ अ. कर्मबन्धनोंमें फंसे बिना कर्म कैसे करें ? ५६
९ आ. अनासक्त रहकर निरन्तर स्वधर्मकर्म एवं कर्तव्यकर्म करते रहना ही कर्मयोगका सार ५८
९ इ. कर्मबन्धनमें पडनेसे पांच क्लेश ६०
९ ई. कर्तव्य मानकर किए गए कर्म, बन्धन नहीं बनते ! ६१
९ उ. कर्मबन्धनसे मुक्त होनेपर ईश्वरकी प्राप्ति ! ६१
१०. अनुभूति ६२
卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ६३